नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सत्र 2023-24 से पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित किया गया है। यह संजीव बुक्स पूर्णतः नवीन पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तक पर आधारित है।

नं. 1

संजीव® बुक्स

इतिहास-XI

विश्व इतिहास के कुछ विषय

(कक्षा 11 के विद्यार्थियों के लिए नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार)

- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 280/-

- प्रकाशक :

  संजीव प्रकाशन

  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,

  जयपुर-3

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  website : www.sanjivprakashan.com

- © प्रकाशकाधीन

- लेजर कम्पोजिंग :

  संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

- मुद्रक :

  आधुनिक बुक बाईन्डर, जयपुर

  *****

❖ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।

❖ इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।

❖ सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विषय-सूची

अनुभाग एक–प्रारम्भिक समाज

कालक्रम एक

(6 लाख वर्ष पूर्व से 1 ई.पू.)

1. लेखन कला और शहरी जीवन 4–38

अनुभाग दो–साम्राज्य

कालक्रम दो

(लगभग 100 ईसापूर्व से 1300 ईसवी तक)

2. तीन महाद्वीपों में फैला हुआ साम्राज्य 42–75
3. यायावर साम्राज्य 76–102

अनुभाग तीन-बदलती परम्पराएँ

कालक्रम तीन

(लगभग 1300-1700)

4. तीन वर्ग 106–138
5. बदलती हुई सांस्कृतिक परम्पराएँ 139–168

अनुभाग चार-आधुनिकीकरण की ओर

कालक्रम चार

(लगभग 1700-2000)

6. मूल निवासियों का विस्थापन 174–196
7. आधुनिकीकरण के रास्ते 197–226

मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न–[इसके लिए संजीव बुक्स के अन्त में दिया गया मानचित्र सम्बन्धी चार्ट देखें।]

◆◆◆

इतिहास कक्षा 11

विश्व इतिहास के कुछ विषय

अनुभाग एक–प्रारम्भिक समाज

कालक्रम एक

(6 लाख वर्ष पूर्व से 1 ई.पू.)

तिथि	अफ्रीका	यूरोप
6 लाख वर्ष पूर्व–500,000 वर्ष वर्तमान से पूर्व	आस्ट्रेलोपिथिकस के जीवाश्म (वर्तमान से 56 लाख वर्ष पूर्व) अग्नि के प्रयोग के साक्ष्य प्राप्त हुए (वर्तमान से 14 लाख वर्ष पूर्व)	
500,000–150,000 वर्तमान से पूर्व	प्राज्ञ मानव (होमो सैपियन्स) के जीवाश्म (1,95,000 वर्तमान से पूर्व)	अग्नि के प्रयोग के प्रमाण (4,00,000 से पूर्व)
50,000–30,000	–	प्राज्ञ मानव (होमो सैपियन्स) के जीवाश्म (40,000)
30,000–10,000	गुफाओं/गुफा आवासों में चित्रकारी (27,500)	गुफाओं/गुफा आवासों में चित्रकारी (विशेषकर फ्रांस और स्पेन में)
7000–6000	पशुओं और कुत्तों को पालतू बनाया गया	
6000–5000	–	गेहूँ और जौ की खेती (यूनान)
4000–3000	गधे को पालतू बनाया गया, ज्वार-बाजरा आदि की खेती, ताँबे का प्रयोग	ताँबे का प्रयोग (क्रीट)
3000–2000	हल द्वारा खेती, प्रथम राजवंशों, नगरों, पिरामिडों, कैलेण्डर, चित्रात्मक लिपि, पैपाइरस पर लेखन (मिस्र)	घोड़े को पालतू बनाया गया (पूर्वी यूरोप)
2000–1900		नगरों, महलों, काँसे का प्रयोग, कुम्हार के चाक, व्यापार का विकास (क्रीट)
1700–1600		लिपि का विकास (क्रीट)
1500–1400	काँच की बोतलों का प्रयोग (मिस्र)	
1100–1000		लोहे का प्रयोग हुआ
900–800	पश्चिमी एशिया के फोनिशियनों ने उत्तरी अफ्रीका में कार्थेज नगर की स्थापना की, भूमध्यसागरीय क्षेत्र में व्यापार का विस्तार	

800–700	लोहे का प्रयोग (सूडान)	प्रथम ओलंपिक खेल (यूनान 776 ई.पू.)
700–600	लोहे का प्रयोग (मिस्र)	
600–500		सिक्कों का प्रयोग (यूनान), रोम गणराज्य की स्थापना (510 ई.पू.)
500–400	फारसियों का मिस्र पर आक्रमण	एथेन्स में 'प्रजातन्त्र' की स्थापना (यूनान)
400–300	मिस्र में सिकन्दरिया की स्थापना (332 ई.पू.) जो ज्ञान का प्रमुख केन्द्र बना	मकदूनिया के सिकन्दर ने मिस्र और पश्चिम एशिया के प्रदेशों पर विजय प्राप्त की (336–323 ई.पू.)

तिथि	**एशिया**	**दक्षिण एशिया**
6 लाख–500,000 वर्तमान से पूर्व	अग्नि का प्रयोग (700,000 वर्तमान से पूर्व, चीन)	रिवात में पाषाणकालीन स्थल (1,900,000 वर्तमान से पूर्व, पाकिस्तान)
150,000–50,000 वर्तमान से पूर्व	प्राज्ञ मानव (होमो सैपियन्स) के जीवाश्म (100,000 वर्तमान से पूर्व, पश्चिम एशिया)	
30,000–10,000 वर्तमान से पूर्व	कुत्ते को पालतू बनाया गया (14,000 पश्चिम एशिया)	भीमबैटका के गुफा-चित्र (मध्य प्रदेश); होमो सैपियन्स के जीवाश्म (25,500 वर्तमान से पूर्व श्रीलंका)
8000–7000 ई.पू.	भेड़ और बकरियों को पालतू बनाया गया, गेहूँ और जौ की खेती (पश्चिम एशिया)	
7000–6000 ई.पू.	सूअर और पशुओं को पालतू बनाया गया (पश्चिम और पूर्व एशिया)	प्रारम्भिक कृषि-बस्तियाँ (बलूचिस्तान)
6000–5000	कुक्कुट-पालन, ज्वार, बाजरा तथा अरबी की खेती (पूर्वी एशिया)	
5000–4000	कपास की खेती (दक्षिण एशिया); ताँबे का प्रयोग (पश्चिम एशिया)	
4000–3000	कुम्हार के चाक का प्रयोग, यातायात के लिए पहिए का प्रयोग (3600 ई.पू.), लेखन का प्रयोग (3200 ई.पू., मेसोपोटामिया), काँसे का प्रयोग	ताँबे का प्रयोग
3000–2000	हल, कृषि, नगर (मेसोपोटामिया); रेशम का प्रयोग (चीन); घोड़े को पालतू बनाया गया (मध्य एशिया); चावल की खेती (दक्षिण-पूर्व एशिया)	हड़प्पाकालीन संस्कृति के नगर, लिपि का प्रयोग (लगभग 2700 ई. पूर्व)
2000–1900	विशेष पानी में रहने वाली भैंस को पालतू बनाया गया (पूर्वी एशिया)	
1600–1500	नगरों, लेखन, राज्यों (शांग राजवंश), काँसे का प्रयोग हुआ (चीन)	
1500–1400	लोहे का प्रयोग हुआ (पश्चिम एशिया)	ऋग्वेद की रचना
1200–1100		लोहे का प्रयोग, महापाषाण (दक्कन और दक्षिण भारत)

1100–1000	एक कोहान वाले ऊँट को पालतू बनाया गया (अरब)	
600–500	सिक्कों का प्रयोग (तुर्की); फारसी साम्राज्य (546 ई.पू.) इसकी राजधानी पर्सिपोलिस थी। चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस (लगभग 551 ई.पू.)	अनेक क्षेत्रों में नगरों और राज्यों की स्थापना, पहली बार सिक्कों का प्रयोग, जैन और बौद्ध धर्म का प्रसार
400–300		मौर्य साम्राज्य की स्थापना (लगभग 321 ई.पू.)
300–200	चीन में एक साम्राज्य की स्थापना (221 ई.पू.) चीन की विशाल दीवार के निर्माण कार्य का प्रारम्भ	

तिथि	**अमेरिका**	**आस्ट्रेलिया/प्रशान्त महासागरीय द्वीप**
50,000–30,000 वर्तमान से पूर्व		प्राज्ञ मानव (होमो सैपियन्स) के जीवाश्म, समुद्र यात्रा के प्राचीनतम संकेत (45,000 वर्ष वर्तमान से पूर्व)
30,000–10,000 वर्तमान से पूर्व	होमो सैपियन्स के जीवाश्म (12,000 वर्ष वर्तमान से पूर्व)	चित्रकला (20,000 वर्ष वर्तमान से पूर्व)
7000–6000	कुम्हड़ा की खेती	
5000–4000	सेम की खेती	
4000–3000	कपास और लौकी की खेती	
3000–2000	गिनिपिग, टर्की को पालतू बनाया, मक्के की खेती	
2000–1900	आलू, मिर्च, कैसावा, मूँगफली की खेती, लामा और एल्पेका को पालतू बनाया	
1200–1100	मैक्सिको खाड़ी के चारों ओर ओल्मेक लोगों की बस्तियाँ, प्रारम्भिक मन्दिर और मूर्ति-शिल्प	पोलिनेशिया और माइक्रोनेशिया में बस्तियाँ
1000–900	चित्रात्मक लिपि का विकास	

1. लेखन कला और शहरी जीवन

पाठ-सार

1. शहरी जीवन की शुरुआत—शहरी जीवन की शुरुआत मेसोपोटामिया में हुई थी।

2. मेसोपोटामिया की स्थिति—मेसोपोटामिया दजला और फरात नदियों के बीच स्थित था। वर्तमान में यह प्रदेश इराक गणराज्य का भाग है। मेसोपोटामिया की सभ्यता अपनी सम्पन्नता, शहरी जीवन, विशाल साहित्य, गणित और खगोल विद्या के लिए प्रसिद्ध है। मेसोपोटामिया की लेखन प्रणाली और उसका साहित्य पूर्वी भूमध्यसागरीय प्रदेशों तथा उत्तरी सीरिया और तुर्की में 2000 ई. पूर्व के बाद फैला।

3. सुमेर तथा अक्कद—इतिहास के आरम्भिक काल में इस प्रदेश को मुख्यत: इसके शहरीकृत दक्षिणी भाग को सुमेर और अक्कद कहा जाता था।

4. बेबीलोनिया—2000 ई. पूर्व के बाद जब बेबीलोन एक महत्वपूर्ण शहर बन गया तब दक्षिणी क्षेत्र को बेबीलोनिया कहा जाने लगा।

5. असीरिया—लगभग 1100 ई. पूर्व से जब असीरियन लोगों ने उत्तर में अपना राज्य स्थापित कर लिया, तब उस क्षेत्र को असीरिया कहा जाने लगा।

6. भाषाएँ—इस प्रदेश की प्रथम ज्ञात भाषा सुमेरियन अर्थात् सुमेरी थी। 2400 ई. पूर्व के आस-पास अक्कदी भाषा प्रचलित हुई। 1400 ई. पूर्व से अरामाइक भाषा का भी प्रचलन होने लगा। यह भाषा हिब्रू से मिलती-जुलती थी और 1000 ई. पूर्व के बाद व्यापक रूप से बोली जाने लगी।

7. मेसोपोटामिया और उसका भूगोल—इराक भौगोलिक विविधता का देश है। यहाँ अच्छी फसल के लिए पर्याप्त वर्षा हो जाती है। यहाँ पशुपालन खेती की अपेक्षा आजीविका का अधिक अच्छा साधन है। पूर्व में दजला की सहायक नदियाँ परिवहन का अच्छा साधन हैं। इसका दक्षिणी भाग रेगिस्तान है और यहाँ पर ही सबसे पहले नगरों और लेखन-प्रणाली का प्रादुर्भाव हुआ। फरात और दजला नदियाँ सिंचाई तथा उपजाऊ मिट्टी यहाँ लाने का काम करती थीं। यहाँ गेहूँ, जौ, मटर, मसूर आदि की खेती की जाती थी तथा भेड़-बकरी आदि जानवर पाले जाते थे। नदियों में मछलियां थीं तथा गर्मी में पिंड खजूर थे।

8. शहरीकरण का महत्त्व—शहरी अर्थव्यवस्थाओं में खाद्य उत्पादन के अतिरिक्त व्यापार, उत्पादन और विभिन्न प्रकार की सेवाओं श्रम-विभाजन एवं एक सामाजिक संगठन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। शहरों में संगठित व्यापार, भण्डारण की आवश्यकता भी होती है।

9. शहरों में माल की आवाजाही—मेसोपोटामिया के लोग लकड़ी, ताँबा, सोना, चाँदी आदि विदेशों से मँगाते थे तथा कपड़ा और कृषि-जन्य उत्पाद निर्यात करते थे। शिल्प, व्यापार और सेवाओं के अलावा मेसोपोटामिया की नहरें और प्राकृतिक जलधाराएँ छोटी-बड़ी बस्तियों के बीच माल के परिवहन के अच्छे मार्ग थे। फरात नदी व्यापार के लिए विश्व-मार्ग के रूप में प्रसिद्ध थी।

10. लेखन कला का विकास—मेसोपोटामिया के लोग मिट्टी की पट्टिकाओं पर लिखा करते थे। वे अपना हिसाब-किताब रखने तथा शब्दकोश बनाने, राजाओं के कार्यों का वर्णन करने आदि में लेखन का प्रयोग करने लगे। उनकी लिपि क्यूनीफार्म (कीलाकार) थी। यहाँ 2600 ई. पू. के आस-पास वर्ण कीलाकार हो गए और भाषा सुमेरियन थी, लेकिन कीलाकार लेखन का रिवाज पहली शताब्दी तक बना रहा।

11. लेखन प्रणाली—जिस ध्वनि के लिए कीलाक्षर या कीलाकार चिह्न का प्रयोग किया जाता था, वह एक अकेला व्यंजन या स्वर नहीं होता था, परन्तु अक्षर होते थे। इस प्रकार लिपिक को सैकड़ों चिह्न सीखने पड़ते थे।

12. साक्षरता—मेसोपोटामिया के बहुत कम लोग पढ़-लिख सकते थे। इसका कारण था कि प्रतीकों या चिह्नों की संख्या सैकड़ों में थी तथा ये काफी जटिल थे।

13. लेखन का प्रयोग—मेसोपोटामिया में व्यापार और लेखन कला की शुरुआत करने वाला उसका राजा एनमर्कर था।

14. दक्षिणी मेसोपोटामिया का शहरीकरण—मन्दिर और राजा—दक्षिणी मेसोपेटामिया में कई तरह के शहर विकसित हुए। कुछ मंदिरों के चारों ओर विकसित हुए, कुछ शहर व्यापारिक केन्द्र थे और कुछ शाही शहर थे।

मंदिर शहर—मेसोपोटामिया में अनेक मन्दिरों का निर्माण किया गया। ये मन्दिर देवी-देवताओं के निवास-स्थान थे। ये मन्दिर ईंटों से बनाए जाते थे। देवता पूजा का केन्द्र-बिन्दु होता था। लोग देवी-देवता के लिए अन्न, दही, मछली आदि लाते थे। कुछ विजेता मुखियाओं ने देवताओं की सेवा में कीमती भेंटें अर्पित करना शुरू कर दिया, जिससे समुदाय के मन्दिरों की सुन्दरता तथा भव्यता बढ़ गई। इससे समुदाय में राजा को ऊँचा स्थान प्राप्त हुआ और समुदाय पर उसका पूर्ण नियन्त्रण स्थापित हो गया। युद्धबन्दियों और स्थानीय लोगों को अनिवार्य रूप से मन्दिर का अथवा प्रत्यक्ष रूप से शासक का काम करना पड़ता था।

मेसोपोटामिया में खूब तकनीकी प्रगति भी हुई। अनेक प्रकार के शिल्पों के लिए काँसे के औजारों का प्रयोग होता था। वास्तुविदों ने ईंटों के स्तम्भ बनाना सीख लिया था। मूर्तिकला के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण उन्नति हुई। कुम्हार चाक के द्वारा बड़े पैमाने पर सुन्दर बर्तन बनाने लगा तथा चित्रों का भी निर्माण हुआ।

15. शहरी जीवन—नगरों की सामाजिक व्यवस्था में एक उच्च वर्ग का उदय हो चुका था। अधिकांश धन-दौलत पर एक छोटे से वर्ग का कब्जा था। समाज में एकल परिवार को ही आदर्श माना जाता था। पिता परिवार का मुखिया होता था। पिता के घर, पशु-धन, खेत आदि पर उसके पुत्रों का अधिकार था। कन्या के माता-पिता कन्या के विवाह के लिए अपनी सहमति देते थे।

16. उर नगर—उर नगर की गलियाँ टेढ़ी-मेढ़ी व संकरी थीं। जल निकासी के लिए नालियाँ नहीं थीं। लोग अपने घर का सारा कूड़ा-कचरा बुहार कर गलियों में डाल देते थे। कमरों के अन्दर रोशनी खिड़कियों से नहीं, बल्कि उन दरवाजों से होकर आती थी, जो आंगन में खुला करते थे।

17. पशु-चारक क्षेत्र में एक व्यापारिक नगर—2000 ई.पू. के बाद मारी नगर शाही राजधानी के रूप में खूब फला-फूला। मारी राज्य में किसान और पशुचारक दोनों ही तरह के लोग रहते थे, परन्तु उस प्रदेश का अधिकांश भाग भेड़-बकरी चराने के लिए ही काम में लिया जाता था।

मारी के राजा एमोराइट समुदाय के थे। उन्होंने मेसोपोटामिया के देवी-देवताओं का आदर ही नहीं किया, बल्कि स्टेपी क्षेत्र के देवता डैगन के लिए मारी नगर में एक मन्दिर भी बनवाया। मारी का विशाल राजमहल वहाँ के शाही परिवार का निवास-स्थान तो था ही, साथ ही वह प्रशासन और उत्पादन, विशेष रूप से कीमती धातुओं के आभूषणों के निर्माण का मुख्य केन्द्र भी था। मारी नगर एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण व्यापारिक स्थल भी था।

18. मेसोपोटामिया संस्कृति में शहरों का महत्त्व—मेसोपोटामिया के लोग शहरी जीवन को महत्त्व देते थे जहाँ अनेक समुदायों तथा संस्कृतियों के लोग साथ-साथ रहा करते थे। ये लोग अपने नगरों पर बहुत अधिक गर्व करते थे।

19. लेखन कला की देन—मेसोपोटामिया की काल-गणना तथा गणित की विद्वत्तापूर्ण परम्परा मेसोपोटामिया की विश्व को सबसे बड़ी देन है। मेसोपोटामियावासी गुणा, भाग, वर्ग तथा वर्गमूल आदि से परिचित थे। उन्होंने एक वर्ष को 12 महीनों में, एक महीने को चार सप्ताहों में, एक दिन को 24 घण्टों में तथा एक घण्टे को 60 मिनट में विभाजित किया था। अपनी लेखन कला और विद्यालयों के कारण ही मेसोपोटामियावासी अपनी उपलब्धियों को सुरक्षित रख सके।

20. एक पुराकालीन पुस्तकालय—असीरियाई शासक असुरबनिपाल (668-627 ई. पू.) ने अपनी राजधानी निनवै में एक पुस्तकालय की स्थापना की थी। उसने इतिहास, महाकाव्य, ज्योतिष विद्या, कविताओं की पट्टिकाओं को इकट्ठा करने का सफल प्रयास किया था। गिलगमेश के महाकाव्य जैसी महत्त्वपूर्ण पट्टिकाओं की प्रतियाँ तैयार की गईं। असुरबनिपाल के पुस्तकालय में कुल मिलाकर 1000 मूल ग्रन्थ थे और लगभग 30,000 पट्टिकाएँ थीं जिन्हें विषयवार वर्गीकृत किया गया था।

21. एक आरम्भिक पुरातत्ववेत्ता—625 ई. पूर्व में दक्षिणी कछार के एक शूरवीर नैबोपोलास्सर ने बेबीलोनिया को असीरियनों के आधिपत्य से मुक्त कराया। बेबीलोन एक प्रसिद्ध नगर था जिसमें अनेक बड़े-बड़े राजमहल तथा